सत्य युग के प्रारम्भ की तिथि – अक्षय तृतीया

देवर्षि कलानाथ शास्त्री

(राष्ट्रपति सम्मानित), प्रधान सम्पादक ''भारती''संस्कृत मासिक
पीठाचार्य, भाषामीमांसा एवं शास्त्रशोध पीठ - विश्वगुरुदीप आश्रम शोध संस्थान, जयपुर
पूर्व अध्यक्ष - राजस्थान संस्कृत अकादमी
आधुनिक संस्कृत पीठ - जगद्गुरु रामानन्दाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय
पूर्व निदेशक - संस्कृत शिक्षा एवं भाषा विभाग, राजस्थान सरकार
सदस्य - संस्कृत आयोग, भारत सरकार

इस देश के पर्वों और उत्सवों में से कुछ तो ऋतु पर्व हैं, जिनमें नई फसल पकने का आमोद-प्रमोद और ऋतु परिवर्तन का उल्लास रचा-बसा होता है। कुछ धार्मिक पर्व हैं, जो देवी-देवताओं को समर्पित होते हैं तथा कुछ लोक पर्व हैं, जो किसी ऐतिहासिक घटना के आधार पर लोक मानस ने प्रारम्भ किए थे। इन सबसे हट कर कुछ ऐसे पर्व भी हैं, जो मानव जीवन और मानव चिन्तन को एक विश्वजनीन, अखंड, अनादि और अनन्त सत्ता के साथ जोड़ते हैं। अक्षय तृतीया ऐसे ही पर्वों में से एक है, जिसे पुण्य पर्व कहा जा सकता है। हमारे प्रत्येक धार्मिक कार्य के प्रारम्भ में जो संकल्प किया जाता है, उसमें भी देश और काल के स्मरण के नाम पर वह कार्य करने वाला व्यक्ति अपने आपको सृष्टि के प्रारम्भ से लेकर आज तक का इतिहास याद करते हुए वर्तमान बिन्दु से जोड़ता है। इसमें वह बतलाता है, कि सृष्टि के प्रारम्भ से अब तक इतने कल्प इतने मन्वन्तर और इतने युग बीत गए हैं। सृष्टि का यह कलेण्डर अरबों वर्षों का है।

यह कलेण्डर वर्तमान बिन्दु से इस प्रकार फैलता है- वर्तमान में हम कलियुग में बैठे हैं, जो 4 लाख 32 हजार वर्ष का होता है। इससे दुगुना द्वापरयुग कहलाता है जो इससे पूर्व बीत गया। कलियुग से तिगुना त्रेतायुग कहलाता है जो उससे पूर्व बीत गया तथा चौगुना सत्ययुग कहलाता है, जो उससे भी पूर्व बीत गया था। इस प्रकार 43 लाख 20 हजार वर्ष की एक चतुर्युगी हुई। यह हमारे कलेण्डर का एक पैमाना है। ऐसी 71 चतुर्युगियों का एक मन्वन्तर होता है और ऐसे 14 मन्वन्तरों का एक कल्प। सृष्टि के एक क्रम में ऐसे 7 कल्प माने जाते हैं। इस प्रकार कुल मिलाकर 4 अरब 32 करोड़ वर्ष के कल्प का सृष्टि क्रम प्रतिदिन हमें याद रखना होता है। इतनी बड़ी कालयात्रा से हमारा मन प्रतिदिन जुड़ा रहता है। वर्तमान में जो कल्प चल रहा है, उसका नाम है श्वेतवाराह, जो मन्वन्तर चल रहा है उसका नाम है वैवस्वत। इस मन्वन्तर में 27 चतुर्युगियाँ बीत चुकी हैं, 28 वीं चल रही है। इतना बड़ा कलेण्डर याद करने वाले मानस में यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है, कि अमुक कल्प या अमुक मन्वन्तर या अमुक युग किस दिन शुरू हुआ होगा। इस जिज्ञासा का

समाधान करने के लिए संस्कृति के इतिहासकारों ने तीन प्रकार की तिथियाँ खोज निकाली हैं। युगादि तिथियाँ वे होती हैं जिनसे किसी युग का प्रारम्भ होता है। उदाहरणार्थ यह माना जाता है कि कलियुग का प्रारम्भ माघ शुक्ल पूर्णिमा को होता है। द्वापर का भाद्रपद कृष्ण त्रयोदशी को, त्रेता का कार्तिक शुक्ल नवमी को और सत्य युग का वैशाख शुक्ल तृतीया को इस वैशाख शुक्ल तृतीया को अक्षय तृतीया (आखा तीज) कहा जाता है, जबकि कार्तिक शुक्ल नवमी को अक्षय नवमी। चतुर्युगी में युगों का क्रम महत्व की दृष्टि से ह्रास का क्रम है। सत्य युग सर्वाधिक पुण्यशाली युग माना जाता है। त्रेता उससे कुछ कम। फिर द्वापर और कलियुग अवर कोटि के माने जाते है। इसी दृष्टि से त्रेता युग के प्रारम्भ की तिथि पुण्य तिथि मानी जाती है, जिस दिन किए हुए धार्मिक कार्य अजर-अमर हो जाते हैं, अक्षय हो जाते हैं। अक्षय तृतीया का तो जो सत्य युग के प्राम्भ की तिथि है, महत्त्व और भी बढ़ा चढ़ा है क्योंकि सत्य युग सर्वाधिक उन्नत और प्रतिष्ठित धर्म युग माना जाता है। इसीलिए इस दिन दिया हुआ दान और किया हुआ पुण्य अक्षय रहने वाला माना जाता है।

इतिहासकारों ने युगादि तिथियों की तरह मन्वन्तरों के प्रारम्भ की तिथियों को मन्वादि तिथि के रूप में भी खोज निकाला है। चैत्र शुक्ल तृतीया, चैत्र पूर्णिमा आदि 14 तिथियाँ मन्वन्तरों के प्रारम्भ होने की तिथियां मानी जाती हैं। इसी प्रकार कल्पों के प्रारम्भ की तिथियां भी गिनायी गयी हैं। चूंकि 7 कल्प माने जाते हैं, अतः 7 कल्पादि तिथियाँ धर्मशास्त्रकारों ने बताई हैं। इनमें वैशाख शुक्ल तृतीया (अक्षय तृतीया) एक कल्प के प्रारम्भ होने की तिथि भी है। इस दृष्टि से अक्षय तृतीया के साथ अनेक परंपराएँ आकर जुड़ी हैं। चूँकि उस दिन सूर्य उच्च का रहता है, उत्तर भारत में ग्रीष्मकाल होता है अतः इस दिन जलदान, प्याऊ लगवाना तथा इसी प्रकार के अनेक धार्मिक कार्यों का बहुत महत्व माना गया है।

इसके अतिरिक्त इस तिथि का महत्व परशुराम जयन्ती होने के कारण अवतार तिथि के रूप में विशिष्ट प्रकार का बन जाता है। इस दिन महर्षि जमदग्नि के घर पुनर्वसु नक्षत्र में भगवान् परशुराम का जन्म हुआ था। यह तिथि विष्णु के अवतार भगवान् परशुराम की जयंती होने के कारण भी विशिष्ट महत्त्व रखती है। परशुराम ब्राह्मण वर्ग के विशिष्ट उपासक देवता हैं। कुछ वर्षों से ब्राह्मणों का जो संगठन हो रहा है उसकी प्रेरक विभूति परशुराम ही है। इसलिये भी अनेक कार्यक्रम उनकी जयंती अक्षय तृतीया से ही प्रारम्भ होते हैं। इसके अतिरिक्त राजस्थान में शेखावटी क्षेत्र में यह तिथि एक अन्य परंपरा से भी जुड़ी हुई मानी जाती है। आखा तीज के दिन संवत 1545 में शेखावत राजवंश के आदिपुरुष राव शेखाजी का निधन रलावता गाँव में एक शमी वृक्ष (खेजडे का पेड) के नीचे घाटवा के युद्ध में लगे घावों के कारण हुआ था, अतः यह उनकी पुण्य तिथि भी है। राजस्थान में (शेखावाटी के अलावा) इस दिन (आखा तीज को) घर-घर जाकर रामा-श्यामा करने की तिथि भी मानी जाती थी। होली दीवाली की तरह मित्रों से अभिवादन के आदान प्रदान की परंपरा

शायद इसी कारण से स्थापित हुई हो कि यह भी कल्प और युग के कलेण्डर की शुरुआत का दिन है।

इसके अतिरिक्त अक्षय तृतीया युग की सृष्टि के प्रारम्भ की तिथि होने के कारण परिवार को बढ़ाने वाली और अक्षय करने वाली तिथि मानी जाती है, अतः इस दिन विवाह का मुहूर्त भी अच्छा माना जाने लगा। राजस्थान में इसे अबूझ सावा कहा जाता है। यही कारण है, कि वर्षों से इस दिन गाँव गाँव में विवाह समारोह देखने को मिलते रहे हैं। इसका एक प्रमुख कारण यह भी है, कि वसंत ऋतु के प्रारम्भ में ही फसल कट चुकी होती है, अतः किसान खेती की व्यस्तता से मुक्त हो जाता है। दूसरी ओर धान की बिक्री से उसका वित्तीय संबल भी बढ़ जाता है, जिसके कारण वह वैशाख मास के विवाह में दिल खोल कर खर्च कर सकता है। तभी तो अक्षय तृतीया को विवाहों की संख्या बहुत बढ़ चढ़ कर निकलती है। बारिश के दिनों में देव सोने की मान्यता के कारण विवाह मुहूर्त नहीं बन पाते, अतः उससे पूर्व ही गाँवों में विवाहों की रस्म से अभिभावक मुक्त होना चाहते हैं। ब्रह्मपुराण आदि पुराणों में तथा धर्मशास्त्र के प्राचीन ग्रंथों में वैशाख शुक्ल तृतीया को सत्य युग की युगादि तिथि ही बताया गया है। यह बात अलग है कि कुछ पंचांगों में वैशाख शुक्ल तृतीया को त्रेता युग की युगादि तिथि बतायी जाती है और कार्तिक शुक्ल नवमी (अक्षय नवमी) सत युग की युगादि तिथि, अत: अक्षय नवमी के दिन भी बहुत दान-पुण्य किये जाते हैं। उस दिन विवाहों की परंपरा नहीं है। सतयुग की बजाय त्रेतायुग की आदितिथि अक्षयतृतीया को कैसे मान लिया गया यह तो नहीं कहा जा सकता, किन्तु कुछ बड़े वेदज्ञ विद्वान भी किसी समय चल पड़ी परंपरा के आधार पर अक्षयतृतीया को त्रेता युगादि मानने लगे थे, और कुछ पंचांग भी, किन्तु पुराणों और धर्मशास्त्रों के साक्ष्यों के आधार पर अक्षय तृतीया ही सत्य युग के प्रारम्भ की अर्थात् प्रत्येक चतुर्युगी के प्रारम्भ की तिथि सिद्ध होती है। वह कल्पादि तिथि भी है, अतः सृष्टि क्रम में उसका बहुत महत्व है।

युगादि एवं कल्पादि तिथियाँ हमें सृष्टि की कालयात्रा के उस विराट आयाम से सीधे जोड़ती है, जिनके आधार पर हमारा चिन्तन ब्रह्माण्डीय और विश्वव्यापी हो गया है। यह बात अलग है कि इस महत्व का बोध सामान्य जन तक न फैल पाने के कारण इसका यह आयाम तो गौण हो गया और दान-पुण्य वाली परंपराएँ तथा अबूझ सावा होने की सुविधा सब लोगों को याद रही। इसके फलस्वरूप इस दिन बाल विवाहों की जो अंध-परंपरा चली, उसके कारण अक्षय तृतीया का महत्व ही धूमिल हो गया। यद्यपि ये विवाह जीवनसाथी के रूप में दो बालक-बालिकाओं को परस्पर जोड़ देने का वचन या वाग्दान की रस्म जैसे ही होते हैं, न तो लड़की ससुराल जाती है न लड़के के पास, वास्तविक विवाह तो मुकलावे या द्विरागमन (गौना) के समय ही माना जाना चाहिए, ऐसा कह कर इनका आधार भी व्याख्यात किया जाता है, किन्तु यह परंपरा सराहनीय नहीं कही जा सकती, वस्तुस्थिति यह है कि किसी भी शास्त्र में इसे अबूझ विवाह का दिन नहीं बताया गया है। विवाह के मुहूर्त तो जिन आधारों पर और कसौटियों पर कसकर निर्धारित किये जाते हैं, वे दूसरे ही है। अक्षय तृतीया से उनका कोई सम्बन्ध नहीं है। इस दिन केवल दान पुण्य करने की महिमा विशिष्ट

मानी गई है। इसकी भी विशेषता यह है कि इस दिन दान दिये जाने वाली वस्तुओं में कोई रत्नाभूषणों या अमूल्य वस्तुओं की ही वांछनीयता हो वैसी बात नहीं है। इस दिन जो भी दिया जाए वह अक्षय हो जाता है, ऐसी भविष्य पुराण आदि की कथा का आधार लेकर इस दिन अत्यन्त सात्त्विक और सीधी सादी ग्रीष्मकालोचित वस्तुओं के दान ही की प्रथा है (जैसे घड़े, सुराही, सत्तू, पंखा, दही, गुड़, चना या ठण्डे फल, ककड़ी आदि) यही दान पृथ्वी, गाय, रत्न, आदि के दान की तरह अक्षय हो जाता है। सत्य युग का यह सीधा-सादा प्रतीक आज के तड़क-भड़क के युग में तपोवन की परंपरा का प्रतिनिधि लगता है।

न जाने किस दिन भाई लोगों ने कन्या दान को भी इससे जोड़कर यह अर्थ लगाया होगा, कि इस दिन उस दान का फल भी अक्षय हो जाएगा। जो भी हो, यह लोकपरंपरा चल पड़ी, तो इसे रोकना लोक मानस के ही बस की बात है। यह अवश्य है कि ऋतुचक्र तथा अन्य सांस्कृतिक परंपराओं को देखते हुए हमारे यहाँ वसंत से प्रारंभ कर उत्सव गिनाए गए हैं। उत्तर भारत के शीत-प्रधान होने के कारण यह स्वाभाविक भी है, कि अधिकांश पर्व और उत्सव समशीतोष्ण ऋतुओं में (जैसे वसंत और शरत्) केन्द्रित हो जाएँ। इस दृष्टि से वैशाख मास में पड़ने वाली अक्षय तृतीया बहुत सुविधाजनक तिथि सिद्ध होती है। तभी इसी दिन अनेक प्रकार के कार्यों के मुहूर्त निकल आते हैं। ब्याह, सगाई, लेन देन का प्रारम्भ, यज्ञोपवीत, वाहन या मकान खरीदना, गृह प्रवेश सभी के लिए यह तिथि उत्तम मानी गई है। तभी तो यह प्राचीन मान्यता है कि यदुवंश के 67 वें राजा गजबाहु ने गजदुर्ग (गजनीगढ़) की नींव अक्षय तृतीया को ही रखी थी। इस दिन बद्रीनाथ धाम के कपाट खुलते हैं और बद्रीविशाल के दर्शनों की परंपरा प्रारम्भ होती है। इस दिन तीर्थस्नान का भी विशेष महत्व है। इसीलिए प्रत्येक तीर्थ, नदी, सरोवर आदि में पुण्य स्नानार्थियों की भीड़ अक्षय तृतीया के दिन देखी जा सकती है। इसका मुकाबला केवल दो ही तिथियां करती हैं, एक तो संवत्सर प्रतिपदा और दूसरी अक्षय नवमी जिसे भ्रमवश कुछ लोग सतयुगादि मान लेते हैं। वैसे भी त्रेता युग को भगवान राम के अवतार का युग मान कर उतना ही महत्व दिया जाता है, जितना सत्य युग को।

इस दृष्टि से इन दोनों तिथियों को अक्षय पुण्य वाली तिथि कहा गया है। इसी प्रकार चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को कल्पों, 14 मन्वन्तरों और 71 चतुर्युगों सहित पूरी सृष्टि का आरंभ करने की तिथि माना जाता है। इसलिए उस दिन नया संवत्सर और नया पंचांग शुरू होता है, उसे भी सृष्ट्यादि कहा जाता है। दक्षिण भारत में इसे ही युगादि या उगादि कहा जाता है। इस प्रकार ये तीन तिथियाँ सृष्टि की विराट काल परिधि के चिन्तन से हमें जोड़ती है और इस बात की प्रतिवर्ष पुनः पुष्टि कर जाती हैं, कि हमारी संस्कृति का चिन्तन किसी युग-विशेष, क्षेत्र-विशेष वागधारा विशेष से जुड़ा न होकर विराट है, विश्वजनीन है, व्यापक है।